JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

रुकोगी नहीं राधिका उपन्यास में एक प्रवासी का स्वदेश लौटने का दर्द

रविकान्त पटेल (शोधार्थी)

डॉ. अनीता नायक (निर्देशक)

हिन्दी अध्ययन शाला एवं शोध केंद्र

महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, छतरपुर (मध्यप्रदेश)

शोध सार : 'रुकोगी नहीं राधिका' उपन्यास में राधिका को एक प्रवासी के रूप में दिखाया गया है। जो अपनी पढ़ाई करने के लिए विदेश जाती है। वह भी अपने पिता से लड़ाई करके क्योंकि उसके स्वभाव में ही जिद्दीपन रहा है। राधिका अपनी पढ़ाई विदेशी विश्वविद्यालय से करती है। वही नौकरी भी करती है। लेकिन वह वापस घर लौटती क्योंकि विदेश में उसे कुछ कमी महसूस होती। है जब वह घर लौटती है तब भी उसको बराबर सम्मान नहीं मिलता तो वह सोचती है कि मैं आई ही क्यों हूं।

बीजबिंदु : प्रवासी, आत्मीय, विदेश, रेस्टोरेंट, उत्सुकता, नौकरी।

प्रस्तावना : उषा प्रियंवदा प्रवासी साहित्यकार है। इनका जन्म 24 दिसंबर 1930 को कानपुर में हुआ था। कानपुर में जन्मी उषा प्रियंवदा ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. तथा पी.एच.डी. की पढ़ाई पूरी करने के बाद दिल्ली के लेडी श्रीराम कॉलेज और इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अध्यापन किया इसी समय उन्हें फुलब्राइट स्कॉलरशिप मिला और वे अमेरिका चली गई।

उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में छठे और सातवें दशक के शहरी परिवारों का संवेदनापूर्ण चित्रण किया है। उस समय शहरी जीवन में बढ़ती उदासी, अकेलेपन, ऊब आदि का अंकन करने में उन्होंने अत्यंत गहरे यथार्थ बोध का परिचय दिया है।

उनके प्रमुख उपन्यास - पचपन खंबे लाल दीवारें, रुकोगी नहीं राधिका, शेषयात्रा, अंतर्वशी, भया कबीर उदास, नदी।

प्रवासी - आमतौर पर वे लोग जो अपने देश या प्रांत या राज्य को छोड़कर रोजगार की तलाश में दूसरे देश या प्रांत या राज्य में जाकर रहते है ,उन्हें प्रवासी कहते है।

उपन्यास की शुरुआत दिल्ली शहर से होती है। जब वह दिल्ली शहर को देखती है। तो उसे वही पुराना शहर नजर आता है।

"कुछ नहीं बदला सब कुछ वैसा ही, जैसा कि सदा से था जैसा कि राधिका ने जाना और बार -बार याद किया। दिल्ली की धूल और गर्द भरी एक शाम । ऊपर फीका, नीला आकाश वृक्षों की मैली पत्तियां, ऊबड़-खाबड़ पेवमेंट, यह राधिका देख और पहचान रही है।"1

तीन वर्ष बाद विदेश में रहने के बाद भी राधिका को अपना शहर नहीं भुला था। राधिका जब एयरपोर्ट पर उतरती है। तो उसे लगता है। की मेरे घर के लोग मुझे लेने आयेंगे लेकिन कोई आत्मीय व्यक्ति उसे लेने नही आता है।

एक अक्षय नाम का लड़का आता है। जिसको उसकी सौतेली मां विद्या ने भेजा था।

"राधिका कुछ समय तक वहीं चुपचाप बैठी रही। इस बात को मन में दुहराती हुई की वह स्वदेश लौट आई है। आज भारत में उसका पहला दिन है। उससे मिलने कोई नहीं पहुंचा । वह एक अनजान व्यक्ति के घर में बैठी है।"2

वह चाह रही थी कि मेरे पास मुझे लेने घर के लोग आए होते तो मुझे और कितना अच्छा लगता। लेकिन में बिना जान पहचान के व्यक्ति के घर में हूं।उसे लग रहा था, कि इतने वर्ष होने के बाद पापा ने उसे क्षमा कर दिया होगा। क्योंकि उसने माफ़ी मांग ली थी।लड़ाई तो सबके घर में होती रहती है,वह उस सब को भुलाकर एक नई जिंदगी की शुरुआत करनी चाहती थी।लेकिन जब वह ट्रेन से दिल्ली से अपने घर जाती है।तो लखनऊ रेलवे स्टेशन पर उसको कोई मिलने नहीं आता लेकिन अचानक उसके रज्जू मामा और सुनीति मामी उसको लेने रेलवे स्टेशन आते है।

"राधिका ने देखा की उनके पीछे ही हांफती -हांफती सुनीति मामी आ रही है और उन्ही के साथ उत्सुक,खिले हुए चेहरे लिए दोनो बच्चे।"3

तब उसके मामा बोलते है कि बेटा हम तो दो तीन दिन से सुबह शाम की रेलगाड़ी देख रहे है।

रज्जू मामा और उनके परिवार से मिलकर राधिका को बहुत खुशी हुई। उसके मन को आस्वस्ती मिली की कोई आत्मीय है ।राधिका जब मामी से मिलने के बाद भाई के बारे में पूछती है, तो मामी बताती है की सब लोग ठीक है।

"मैने सोचा था कि शायद वे एयरपोर्ट पर आएं, पर फुरसत न मिली होगी।"4

इससे राधिका आहत होती है,लेकिन अपने दर्द को छिपा जाती है कि भाई को काम से समय न मिला होगा इसलिए नहीं आया है।

फिर वह मामा जी के साथ उनके घर जाती है। उनके परिवार से मिलती है। सभी लोग उनकी आवभगत करते है। फिर शाम को राधिका और उसके मामा राधिका के भाई के घर जाते है लेकिन भाई के घर में कोई नहीं मिलता है।

"लगता है कि मैं अच्छी सायत से नहीं निकली।"5

उसके बाद राधिका अपने घर जाती है। तो घर पर देखती है कि उसकी सौतेली माँ विद्या बस घर पर रहती है।उसके पिता गंगा पार वाली कोठी में अकेले रहते है।और एक नौकर रहता है जो उनकी देखभाल करता है। राधिका से मिलने पड़ोस के बहुत सारे लोग आते है और अजीब -अजीब प्रश्न करते है।

"सिगरेट,शराब तो राधिका पीने ही लगी होगी।"6

बहुत दिन तक राधिका के घर पर उसके पिता उससे मिलने घर पर नहीं आते है तो राधिका उनसे मिलने गंगा पर वाली कोठी चली जाती है।वह पापा से मिलती है तो वह गंभीर होकर बात करते है, लेकिन ऐसा लगता है कि पापा को आने की कोई उत्सुकता नहीं हुई। राधिका तो यह सोचकर आई थी कि यही घर पर रहकर पापा के काम में हाथ बाटूंगी लेकिन पापा ऐसा कुछ नहीं चाहते थे।

" अभी तो रहोगी ? पापा पूछ रहे थे

नहीं कल जाऊंगी।बिना सोचे ही राधिका के मुख से निकल पड़ा।

किधर जाना है ? वापस दिल्ली।"7

कुछ काम तलाश करूंगी घर पर बैठकर क्या करूंगी।इसके बाद वह दिल्ली वापस आ जाती है । और एक रेस्टोरेंट में बैठी रहती है तभी उसको उसी रेस्टोरेंट में अक्षय भी मिल जाता हैं और दोनों बाते करते है। तभी राधिका कहती है।

"अभी लौटे हुए मुझे एक सप्ताह भी नहीं हुआ और में अभी से सोचने लगी हूं कि बेकार ही आई"8

अब उसे लगने लगा कि वह बेकार ही भारत आ गई। घर का लगाव एक ही सप्ताह में खत्म हो गया वह फिर अकेली पड़ गई।राधिका फिर अपने दोस्त मनीष से मिलती है। और बताती है कि विदेश में उसे संस्कृत में

सहायक शिक्षक की नौकरी मिल गई लेकिन मन को शांति नही मिली तो मैंने सोचा कि भारत जाया जाया तो शांति मिले।

"अक्सर टॉमस वुल्फ के उस नॉवेल का शीर्षक याद आता रहता है 'तुम घर वापस नहीं जा सकते' कुछ अजीब ही किस्म को ही हो गई हूं, न वहां सुखी, न यहां।"9

निष्कर्ष : इसी तरह राधिका विदेश से आकर अनेक अंतर्द्वंद्व से गुजरती है। उसको अकेलापन महसूस होता है,जब व्यक्ति अपने लोगों से दूर रहती है तो उसे अपनों के प्रति लगाव रहता है । लेकिन जब वहां पहुंचता है।और उसे बराबर महत्व नहीं मिलता है,तो वह खिन्न हो जाता है।

इसी तरह प्रवासी व्यक्ति जब विदेश में रहता है तो उसे अपने देश की बहुत याद आती है।लेकिन जब वह वापस आता है, तो उसे एक धक्का लगता है।

क्योंकि स्थिति बहुत बदल जाती है और जैसा वह सोचता है वैसा नहीं होता है । तो उसे वापस आना ही बेमानी लगने लगता हैं । यही घटना राधिका के साथ होती है जो इस उपन्यास में दिखाया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. उषा प्रियंवदा, रुकोगी नहीं राधिका, हिन्दी पॉकेट बुक्स, संस्करण -2019, पृष्ठ 05
2. उषा प्रियंवदा, रुकोगी नहीं राधिका, हिन्दी पॉकेट बुक्स, संस्करण -2019, पृष्ठ 09
3. उषा प्रियंवदा, रुकोगी नहीं राधिका, हिन्दी पॉकेट बुक्स, संस्करण -2019, पृष्ठ 19
4. उषा प्रियंवदा, रुकोगी नहीं राधिका, हिन्दी पॉकेट बुक्स, संस्करण -2019, पृष्ठ 21
5. उषा प्रियंवदा, रुकोगी नहीं राधिका, हिन्दी पॉकेट बुक्स, संस्करण -2019, पृष्ठ 26
6. उषा प्रियंवदा, रुकोगी नहीं राधिका, हिन्दी पॉकेट बुक्स, संस्करण -2019, पृष्ठ 50
7. उषा प्रियंवदा, रुकोगी नहीं राधिका, हिन्दी पॉकेट बुक्स, संस्करण -2019, पृष्ठ 54
8. उषा प्रियंवदा, रुकोगी नहीं राधिका, हिन्दी पॉकेट बुक्स, संस्करण -2019, पृष्ठ 56
9. उषा प्रियंवदा, रुकोगी नहीं राधिका, हिन्दी पॉकेट बुक्स, संस्करण -2019, पृष्ठ 78-79